वर्षानुं आगमन

ह. भायाणी

वर्षाना आगमने

मेघो उपर चडी आव्या छे –

गर्जता, क्वचित मंद्र ध्वनि करता, विजळीना झळकारावाळा जळबिंदु टपकावता ;

केटलाक केश, चंपो, शण, कुरंटक (पीळो कांटासेरिओ), सर्षप, पद्मपरागनो वान धरता (नील) ;

केटलाक लाखनो रस, किंशुक, जासुद, बंधुजीवक (बपोरियो). ऊंची जातनो हींगळोक, चंदननो रस, घेटा अने ससलानुं रुधिर, इंद्रगोप – एनो वान धरता (रक्त) ;

मयूर, गळी, पोपट अने चास पक्षीनां पीछां, भ्रमरनी पांख, प्रियंगु, नीलोत्पल, तरत खीलेलुं शिरीषपुष्प–एनो वान धरता (हरित–नील) ;

केटलाक आंजण, भृंग, अरिष्टरत्न, महिष – एनो फन धरता (श्याम);

पवनवेगे विशाळ गगनमां चपळताथी गति करता ;

उपराउपर त्वरित निर्मळ जळधारा वरसावता–जे प्रचंड पवनवेगे चोतरफ फेलाती हती ;

धारापाते धरातळने शीतळ करता, अने धराने हरियाळीनी कांचळी पहेरावता.

वृक्षराजि नवपल्लवित बनी छे ;

वल्ली–वितान प्रसर्यां छे ; ऊंचाणवाळा प्रदेशो रमणीय दीसे छे ;

पहाडना शिखरो अने ढोळावो परथी झरणां दडी रह्यां छे ;

गिरिनदीओमां डहोळुं जळवेगे वही रह्युं छे अने तेमां फीणना गोटा दोडे छे ;

उपवनो सर्ज, अर्जुन, कदंब, कुटज, शिलींध्रनी सुगंधे मध्रमण छे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेघगर्जनाथी हृष्टतुष्ट मयूरो मुक्त कंठे केकारव करता, ऋतुबळे मत्त थईने ढेलोनी साथे नृत्य करे छे ;

कोकिलोनो टहुकार प्रसरे छे ;

इंद्रगोप सरकी रह्या छे ;

देडका डणके छे ;

पुष्पमधुना पाने मत्त, लोल भ्रमर-भ्रमरीओ टोळे वळी उद्यानोमां गुंजन करे छे ;

चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारानुं तेज श्याम मेघोने लीधे ढंकाई गयुं छे ;

गगने मेघधनुष्यनो पट्ट पहेर्यो छे ;

ऊडती बगलीओनी हारोथी मेघो शोभी रह्या छे ;

कारंड, चक्रवाक, कलहंस उत्कंठित बन्या छे.

(जैन आगम 'ज्ञाताधर्मकथा', प्रथम श्रुतस्कंधमांनुं वर्षावर्णन)
अनुवाद – ह. भायाणी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org